चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
16 से 31 अगस्त 2026 तक कपास की खेती के लिए सुझाव

'A+'
NAEAB – ICAR Accredited

अगस्त माह के पहले पखवाड़े में प्रदेश के कई जिलों में अच्छी बारिश हुई है जहाँ बारिश कम हुयी है वहाँ भी काफी आद्रता है इसलिए नरमा की फसल में सूटी मोल्ड, जड़ गलन, टिंडा गलन, उखेड़ा, हरा तेला, सफेद मक्खी एवं गुलाबी सुंडी का प्रभाव देखने को मिल सकता है, इसलिए अपने खेत का प्रतिदिन निरीक्षण करें। अत्यधिक बारिश के बाद खेत से जल निकासी का प्रबंध अवश्य करें। किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक का प्रयोग कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार ही करें।

अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव

- गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 20 टिंडो को तोड़कर निरीक्षण करें। गुलाबी सुंडी का प्रकोप टिंडों में 5 से 10 प्रतिशत होने पर 100 ग्राम इमामेक्टिन बेन्जोएट 5% एस जी या 600 मिलीलीटर प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी को 175–200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- सफेद मक्खी का ज्यादा प्रकोप होने पर 400 मिलीलीटर पाईरीप्रॉक्सिफेन (डायटा) 10 EC या 240 मिलीलीटर स्पाइरोमैसीफेन (ओबेरोन) 22.9 SC को 200–250 लीटर पानी में घोलकर 10 से 12 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार बारी–बारी से छिड़काव करें।

उर्वरक

- टिंडे बनने के बाद कपास की फसल में 2 पैकेट **13:0:45** (एन पी के) को 100 लीटर पानी के साथ मिल कर प्रति एकड छिड़काव करें।
- बी. टी. कपास की फसल अगर 60 दिन से ऊपर की है तो 2% यूरिया, 0.5% जिंक सल्फेट (21%) का 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।
- सूक्ष्म पोषक तत्त्व जैसे की बोरोन, मैंगनीज और आयरन केवल लक्षण दिखाई देने पर ही डालें।
- बी.टी. कपास की अधिकतम उत्पदान के लिए बौकी एवं फूल बनने की अवस्था पर सिंचाई या बारिश से पूर्व एवं बाद (12 घंटे के भीतर) NAA की 25 मि.ली. और कोबाल्ट क्लोराइड की एक ग्राम मात्रा को 100 लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

कीट प्रबंधन

- अगस्त माह में कपास की फसल में सफेद मक्खी वं हरे तेला का प्रकोप शुरू हो जाता हैं इसलिए इनकी निगरानी रखें। सफेद मक्खी यदि 6–8 प्रौढ़ प्रत्ति पत्ता एवं हरा तेला 2 शिशु प्रति पत्ता मिलते हैं तो 60 ग्राम फ्लॉनिकामिड़ (उलाला) 50 डब्लू जी या 400 मिलीलीटर एफिडोपायरोपेन (सेफिना) 50 जी/एल डी सी को 175–200 लीटर पानी की दर से एक छिड़काव करें।
- जिन किसान भाइयों ने अपने खेतों में बी टी नरमा की लकड़ियों को भंडारित करके रखा है या उनके खेतों के आसपास कपास की जिनिंग व बिनौलों से तेल निकालने वाली मिल लगती है उन किसानों को अपने खेतों

पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि इन किसानों के खेतों में गुलाबी सुण्डी का प्रकोप अधिक होता है।

- गुलाबी सुंडी का प्रकोप टिंडों में 5 से 10 प्रतिशत होने पर एक छिड़काव 100 ग्राम इमामेक्टिन बेन्जोएट 5% एस जी को 175–200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ छिड़काव करें (स्त्रोत: CIB&RC)। दूसरा छिड़काव आवश्यकतानुसार 600 मिलीलीटर प्रोफेनोफोस (क्यूराक्रोन/सेल्क्रोन/कैरिना) 50 ई सी या 800 मिलीटर क्विनालफॉस (एकालक्स) 25 ई सी को 175–200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- इस माह से देशी कपास में चित्तीदार सुंडी का प्रकोप होता हैं जिसमें बढ़ती शाखा का मुरझा जाना, बोक्की या डोडी का गिरना या पँखडिनुमा बोक्की का बनना, इत्यादि लक्षण शामिल हैं। अतः इसके प्रकोप की निगरानी अवश्य करें। इसके नियंत्रण के लिए 60 मिली क्लोरएंट्रानिलीप्रोल 18.5 एस सी (स्त्रोत: CIB&RC) या 75 मिली स्पाईनोसैड (ट्रेसर) को 175–200 लीटर पानी की दर से प्रति एकड़ छिड़काव करें।

रोग प्रबंधन

- जड़ गलन रोग से प्रभावित पौधों के आसपास के स्वस्थ पौधों में कार्बेंडाजिम 50 WP (2 ग्राम प्रति लीटर का घोल) बनाकर 400 से 500 मिलीलीटर जड़ों में डालें।
- बीमारी से सूखे हुए पौधों को उखाड़ दे ताकि बीमारी को आगे बढ़ने से रोका जा सके।
- जीवाणु अंगमारी और टिंडा गलन रोग के लिए किसान भाई 6 से 8 ग्राम स्ट्रेप्टोसाक्लीन और 600 से 800 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 50%WP को 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ 15 से 20 दिन के अंतराल पर दो से तीन छिड़काव करें।
- पैराविल्ट के लिए किसान भाई लक्षण दिखाई देते ही 24 से 48 घंटों के अंदर 2 ग्राम कोबाल्ट क्लोराइड 200 लीटर पानी में घोल बनाकर 24 से 48 घंटे में खेत में छिड़काव करें।

अन्य सुझाव

- विश्वविद्यालय द्वारा कपास की खेती के लिए हर 15 दिन में वैज्ञानिक सलाह जारी की जाती है अतः उसके अनुसार ही सस्य क्रियांए एवं कीटनाशकों का प्रयोग करें।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

8002398139 7015105638 9812700110 9416530089 9041126105 9466812467 8901047834 8558090831

कपास अनुभाग, आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग

अनुसंधान निदेशालय,चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय , हिसार

सूझ-बूझ के साथ वैज्ञानिक सुझाव अपनाओगे, तो लागत को घटाओगे, भरपूर फसल पाओगे।
आमदनी को बढ़ाओगे, मृदा को भी बचाओगे, खुशहालआजऔर खुशहाल कल को बनाओगे ।।"

नरमा की फसल में वर्तमान स्थिति के चित्र

पत्ती मरोड़ रोग के लक्षण

जड़ गलन के लक्षण

टिंडा गलन के लक्षण

हरा तेला प्रकोप के लक्षण

सफ़ेद मक्खी (फाका) के प्रकोप के लक्षण	गुलाबी सुंडी का लार्वा